IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मानवीय मुल्य एंव भारतीय समाजः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनुराज,

स्नातकोत्तर (शिक्षा)

सारांशः– मूल्य वे आदर्श तथा विश्वास हैं, जिन्हें समाज के अधिकांश सदस्यों ने अपना लिया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। देश काल तथा परिस्थितियों के अनुसार समाज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। प्रत्येक समाज की अपनी मौलिकता होती है, जो उसकी संस्कृति में झलकती है। अपनी इसी मौलिकता के कारण ही उस समाज की पहचान होती है। प्रत्येक पीढ़ी विरासत में प्राप्त मूल्यों को अपनाती है। इन्हीं मूल्यों के द्वारा उसका विकास होता है। प्रत्येक समाज की आकांक्षाए होती है, उसी के अनुरूप उसके मूल्य, रहन–सहन, आदर्श, रीति–रिवाज तथा परम्पराएं होती हैं। भारत की संस्कृति काफी प्राचीन है। वर्तमान समाज का परम्परागत स्वरूप काफी हद तक बदल गया है। उसके मूल्य, आचार–विचार, रीति–रिवाज और परम्पराएँ नवीनता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मनुष्य के मन में कुछ आकांक्षाएं होती हैं, जिन्हें वह पूरी करना चाहता हे। आकांक्षाए सैद्धांतिक होती हे और मूल्य व्यावहारिक। स्वतंत्र भारत की व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक आकांक्षाओं के अनुरूप ही शैक्षिक आकांक्षाएँ निर्धारित की गई। इन आकांक्षाओं को समाज द्वारा स्वीकृत कराके मूल्यों का रूप दिया गया।

बीज शब्दः आदर्श, मूल्य, मौलिकता, विरासत, आकांक्षाएँ, संस्कृति, परम्पराएँ।

मूल्यों की विशेषताएँ तथा अवधारणाएँः–

1. मूल्यों के आधारभूत सिद्धांत है जो सर्वमान्य होते हैं।
2. मूल्य चेतना एवं भावना को प्रदर्शित करने का साधन है।
3. मूल्य मानव व्यवहार का आधार होता है।
4. मूल्यों की स्थापना जीवन पर्यन्त प्रक्रिया है।
5. मूल्य सामाजिक एकता के रूप में काम करते हैं।
6. मूल्य सामूहिक अन्तक्रिया में स्थायित्व व समान व्यवहारों के प्रतिमानों के रूप में उपस्थित होते हैं।
7. मूल्यों का एक अधिक्रम होता है। हम विशिष्ट मूल्यों से लेकर ठोस मूल्यों तक को पा सकते हैं।

मूल्यों के प्रकारः–

सामान्यतः मूल्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक दो प्रकार के होते हैं। हमारा जीवन वातावरण तथा वंशानुगत दोनों से प्रभावित होता हैं। वातावरण मूल्यों पर गहरा प्रभाव डालता है। मूल्य मानव व्यवहार के आधार तथा नियंत्रक होते हें। प्रत्येक व्यक्ति के उद्देश्य, दृष्टिकोण, आचार–विचार तथा आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं, उसी प्रकार व्यक्तियों के मूल्यों में भी भिन्नता पाई जाती है। सामान्य तौर पर पाए जाने वाले प्रमुख मूल्य इस प्रकार हैं– व्यक्तिगत, समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रजातांत्रिक, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व, धर्म निरपेक्षता, सत्य और अहिंसा, विश्व बन्धुत्व भौतिकता आदि।

प्राचीन तथा वर्तमान भारतीय समाज के मूल्यों में भिन्नताः– भारत के परम्परागत और आधुनिक दोनों प्रकार के मूल्यों का प्रसार देखने में आता है। भारत के प्राचीन और आधुनिक मूल्यों में भिन्नता देखने को मिलती है। प्राचीन समय में भारतीय संस्कृति का चार **मूल्यों–** अर्थ, काम, धर्म तथा मोक्ष पर ही अधिक जोर रहा है प्राचीन संस्कृति का उद्देश्य आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचकर मोक्ष प्राप्त करना था।

वर्तमान युग में भारतीय सामाजिक सरंचना में परिवर्तन आने का कारण भारतीयों की प्राचीन मूल्यों के प्रति उदासीनता बढ़ने लगी तथा नए मूल्यों के प्रति लगाव विकसित होने लगा। देश के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा को बनाए रखना आवश्यक है। परम्परागत तथा नए मूल्यों को समन्वित करके ही वर्तमान भारतीय संस्कृति और समाज को जीवित रखा जा सकेगा।

आधुनिक भारतीय समाज के मूल्यः– भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। स्वतंत्रता, न्याय, समानता, भ्रातृत्व भाव तथा धर्म निरपेक्षता प्रजातंत्र के मूल्य समझे जाते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के कारण भारतीय समाज आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर हो रहा हैं। वर्तमान भारतीय समाज अपनी आकांक्षाओं को मूल्यों के आधार पर प्राप्त करना चाहता है। इसी कारण प्राचीन तथा वर्तमान समाज के मूल्यों में अंतर पाया जाता है। आधुनिक भारतीय प्रजातांत्रिक देश के लिए आवश्यक मूल्य निम्नलिखित हैंः–

1. **स्वतंत्रता का मूल्यः–** प्रजातांत्रिक देश के लिए स्वतंत्रता का विशेष महत्व है। भारत जैसे देश में प्रत्येक नागरिक को स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार प्राप्त है। यहाँ सभी को संघ बनाने की, सभा करने को, निवास करने को, भ्रमण करने को, धर्म पालन करने आदि की स्वतंत्रता प्राप्त हैं। इनका उचित ढंग से प्रयोग करने पर ही स्वतंत्रता मूल्य की प्राप्ति कर सकना संभव है।
2. **न्याय का मूल्य–** स्वतंत्र भारत में संविधान के अन्तर्गत सभी नागरिकों को न्याय का मौलिक अधिकार प्राप्त हे। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक न्याय मिलना चाहिए, यही वर्तमान भारतीय समाज का न्याय का मूल्य है। सामाजिक न्याय से अभिप्राय वर्गहीन समाज की स्थापना करना पिछड़े वर्ग को विकसित करने के लिए विशेष अवसर प्रदान करना तथा कानून की दृष्टि से सबको समान मानना है इस मूल्य को जीवन में अपनाये जाने से ही सामाजिक न्याय की प्राप्ति हो सकेगी। भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य है यहां सभी धर्मों को समान अधिकार तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है इस प्रकार से धार्मिक न्याय के मूल्य को प्राप्त करके हम भारत की प्रजातांत्रिक व्यवस्था को सफल बना सकते हैं।
3. **समानता का मूल्यः–** भारतीय समाज में समानता मौलिक अधिकार के रूप में प्राप्त है समानता का मूल्य ही समाज को उन्नति के शिखर पर ले जा सकता है। भारत में सभी को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त है। सभी को भारतीय समाज में राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक समानता प्राप्त है।
4. **विश्व बंधुत्व की भावना का मूल्यः–** आज का मानव भय तथा असुरक्षा से घिरा हुआ है। आज सभी राष्ट्रों के बीच उदारता तथा सहयोग, प्रेम तथा न्याय की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है। वर्तमान भारतीय समाज में मानव का झुकाव अन्तर्राष्ट्रीयता की ओर बढ़ रहा है। विश्व बंधुत्व के मूल्य के द्वारा ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। तथा विश्व के सभी लोगों को सही अर्थों में विकास की ओर अग्रसित किया जा सकता है।
5. **सत्य और अहिंसा का मूल्यः–** भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'सत्यमेव जयते' रहा है। 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' हमारा जीवन दर्शन है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांत को

अपनाकर ही देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाया। सत्य और अहिंसा के मूल्य को अपनाकर ही जीवन में सच्चा सुख और आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्षः– मूल्य और शिक्षा के मध्य एक घनिष्ठ संबधं होता है। मूल्य मानवोचित लक्ष्य होते हैं। शिक्षा विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के व्यवहार रूपांतरण का साधन हैं। शिक्षा की व्यवस्था किसी न किसी प्रकार की मूल्य व्यवस्था से संचालित होती है। शिक्षा के समुचित परिवर्तनों से ही सामाजिक मूल्यों की प्राप्ति संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. Bhagia, Sushma (1986), Approaches to value-oriented education in Ruhela, S.P. (Ed.) Human Values and Education, New Dlehi: Sterling Publishers.
2. Bhat, R.K. (1996), Towards A Value Base Education Sysem, University News. Octover 21.
3. Bull, Narman, J. (1969), Moral Education, London: Routledge and Kegan Paul.
4. Chaudhari, U.S. (1974), A Comparative Study of values Reflected in National and State level Hindi Text Books, Unpublished M.Ed. Dissertation, University of Indore.
5. Government of Karnataka, (1987), Education in Human Values (Tant Book-Cum-Reference Book), Mysore Government Tant Book Press.
6. In Law, Gail M. (1972), Values in Transition: A Handbook, New York: John Wiley and Sons, Tmc.